नैक (NAAC) द्वारा “A” ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपक़ के विभाग - Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ई-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में वन्य जीव पर चित्र प्रदर्शनी उद्घाटित

विश्वविद्यालय, बहार नेचर फाउंडेशन, जनकृति का संयुक्त उपक्रम

वन्य जीवों की रक्षा से ही प्रकृति बचेगी - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्ष दि. 04 अक्टूबर 2015: हम विकास के नाम पर प्रकृति में विद्रोहक मन्द जीव और जंगलों को नष्ट करते जा रहे हैं। जहां-तहां प्रकृति का शोषण हो रहा है। वन्य जीव हमारी प्रकृति की अमूर्त धरोहर है उसका बचाव करने से ही प्रकृति बचेगी। उक्तशय्य के विवार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के त्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में बहार नेचर फाउंडेशन एवं जनकृति संस्था तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्त्वावधान में रविवार दि. 04 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वाचन विद्यापीठ भवन में ‘वन्य जीव चित्र प्रदर्शनी’ एवं वन्य जीवन पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता बहार नेचर फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. किशोर वानखेडे ने की।
चित्र प्रदर्शनी का उदघाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशकर मिश्र ने फीता काटकर किया। उदघाटन के बाद उन्होंने प्रकृति, पर्यावरण और वन्य जीव विषय पर उपस्थितों को संबोधित किया। दिखा हो कि 1 से 7 अक्टूबर तक पूरा विश्व में विश्व वन्य जीव संसाग जाना जाता है। इसी के उपलब्ध में बहार नेचर फाउंडेशन की पहल पर विश्वविद्यालय में विभिन्न संस्थाओं ने मिलकर वन्य जीव प्रदर्शनी और इससे संबंधित उपक्रमों का आयोजन किया। प्रदर्शनी में 100 से अधिक चित्रों को प्रदर्शित किया गया।

कुलपति प्रो. मिश्र ने वन्य जीव एवं प्रकृति की रक्षा के प्रति समाज में चेतना लाए की दिशा में इस प्रकार के कार्यक्रम एवं उपक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रकृति से एक बार प्रजातियां नष्ट होने से मनुष्य जीवन ही
संकट में पड़ सकता है। प्रकृति की रक्षा के लिए विश्वन नगर पर होने वाले कार्य एक बड़े आंदोलन में परिवर्तित होने चाहिए। कार्यक्रम में कुलपति के निकट परीक्षण दंडों को उनके द्वारा उपस्थितिन में लिए गये शोध के लिए सम्मानित किया गया। मंचास्त्र अन्तिम्यों को वन्य जीवों के चित्र भंग कर स्वागत किया गया।

चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद अनुवाद एवं निर्वाचन विद्यापीठ के सभागार में वन्य जीवों के महत्व पर व्याख्यान एवं पावर प्लेज़र प्रेस्टेंचर किया गया जिसमें मधुमक्खी विशेषज्ञ डॉ. गोपाल पालवाल ने प्रथम सत्र में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का प्राप्तव्य प्रमुख विशेषज्ञ वानखेडे ने किया। संचालन स्त्रीहल कुब्बे ने तथा आभार वैभव देशमुख ने किया।

कार्यक्रम में बहार नेचर फाउंडेशन के रमेश बाकडे, रवींद्र पाटल, दिलीप बीरखेडे, राहुल तेलरांधे, डॉ. बाबाजी चेवडे, संजय इंगले नवागांवकर, डॉ. जयंत वाघ, जयंत सबाने, दोपक गुढेकर, वैभव देशमुख, अश्विन श्रीवास, राजदीप राठोड़, सारिका मूर, नमता सबाने, राजस्थान सेवा संगठन के कार्यक्रम अधिकारी तथा विवि के जनसंपर्क अधिकारी एस. नीरज, नीरज, निरीक्षण प्रेण्य, डॉ. राजीव, विश्वविद्यालय, बहार नेचर फाउंडेशन, जनकृति योजना के अध्यक्ष कुमार गौरव सहित विद्यार्थियों उपस्थित थे।

हिंदी विश्वविद्यालय वन्य जीव चित्र प्रदर्शनाचे उद्घाटन आज विश्वविद्यालय, बहार नेचर फाउंडेशन, जनकृति योजना
वर्षी दि. 04 ऑक्टोबर 2015: विकासच्या नावार निसर्गातील विद्यमान वन्य जीव आणि जंगलांचे नष्ट होत हाहात.

अन्य-अन्य प्रकारातील निसर्गांचे शोषण होत चालते आहे. वन्य जीव हे निसर्गाच्या अनुभूत ठेवा आहे त्याची बचाव करण्यासाठी पुढकार ठेवणाऱ्या उद्योगात जाऊन आहे. असे विचार कुलमुळे प्रांगणारे नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे. असे विचार कुलमुळे प्रांगणारे नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे. असे विचार कुलमुळे प्रांगणारे नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे.

चित्र प्रदर्शनांचे उद्घाटन प्रांगणारे नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे. अनंतर प्रकारातील नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे. अनंतर प्रकारातील नित्य यांची विविधतेचा संग्रह आहे.

याचे शंभर हून अनेक चित्र प्रदर्श्यांनी केले. प्रदर्शनांनी केले. प्रदर्शनांनी केले. प्रदर्शनांनी केले. याचे शंभर हून अनेक चित्र प्रदर्श्यांनी केले. प्रदर्शनांनी केले. प्रदर्शनांनी केले.

कार्यक्रमात बधाने प्रांगणारे रमेश बाकडे, रवींद्र पाटल, डिलीप विसेकर, राहुल तेलराज, डॉ. बाबाजी वेंकटे, संजय इंगरे तिगांवकर, डॉ. जयंत वाघ, जयंत सवाने, पराग दंडगे, दीपक गुडेकर, वैभव देशमुख, अशिव श्रीवास, राजदीप राठोड, नमता सवाने, सारा भोक, राष्ट्रीय संग्रहालयाच्या अन्वेषण विभागातील प्रांगणांनी केले. प्रांगणांनी केले. प्रांगणांनी केले. प्रांगणांनी केले.